THE DEPUTY CHAIRMAN : I am not saying that you do not have a point of order. But let me first listen to him. Let me listen to him. It is a simple question. *(Interruptions)* What I have said is that we do not have this convention, generally. We have as many Divisions. I do not want the quarrel to be transferred to the Chair. *(Interruptions)* Please sit down, When the Chair is trying to solve the problem, it is confronted with something else. I am trying to ask the Minister as *to* what he is going to do. Then, I would give my ruling whether I want to do it or not.

SHRI P. A. SANGMA : Madam, I would respectfully submit that I would request the Leader of the House to convene a meeting of all the political parties. I am prepared to attend that meeting and explain the position. We would give the whole, the full, picture of what the Rama-nujam Committee has said and what we propose to do. *(Interruptions)* Till then, the matter would be deferred. *(Interruptions)* .

THE DEPUTY CHAIRMAN : Let me hear. Let me hear what he is saying. Let me hear what he wants me to do. I have not heard the last sentence.

SHRl *P.* A. SANGMA : Madam, I am requesting for a meeting of the leaders of all the apolitical parties to be convened when the Government would be in a position *to* explain as to what the Rama-njagsjviCbmmittee report is and what we prepose to do. Till then, ...*(Interruptions).*

THE DEPUTY CHAIRMAN : Let me hear. Till then, what? *(Interruptions)* I want to hear. You may not be interested. *(Interuptions)* Till then, What? Let me hear him. Should I not have the right to hear him? Let me hear him first. Then, you can speak whatever you like.

SHRI P. A. SANGMA : Madam, I said that till then, the introduction of the Bill would be deferred. *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN : You are making noise without hearing what he is saying. Now, Mr. Ahluwalia, please.

REFERENCES

DEMAND OF SHIROMANI AKALI DAL (AMRITSAR) FOR INDEPENDENT PUNJAB

श्री एस. एस. अहलुवालिया (बिहार) : उपसभापति महोदया, मैं आपके माध्यम से और सदन के माध्यम से सारे देश का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित कराना चाहता हूं कि शिरोमणि अकाली दल अमृतसर ने कल अमृतसर में एक स्वतंत्र पंजाब की मांग की है। यह शिरोमणि अकाली दल. . **(व्यवधान)**

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu) : Madam, we want to hear what he is saying. Can we have some peace and quiet in the House ?

THE DEPUTY CHAIRMAN : Order, please.

श्री एस. एस. अहलुवालिया : शिरोमणि अकाली दल एक राजनीतिक दल है जो पंजाब में है। पिछले कई वर्षों से हमने देखा कि शिरोमणि अकाली दल कई भागों में बंटा हुआ था, छोटे छोटे भागों में बंटा हुआ था और सब ने मिल कर शिरो-

मणि अकाली दल अमृतसर का गठन किया है। एक तरफ मैं इस बात का स्वागत करता हूं कि उन्होंने ऐसी पहल की जहां सारा शिरोमणि अकाली दल एक हो कर के इकट्ठा हो कर छोटे छोटे दलों को खत्म कर के एकमुश्त खड़ा है परन्तु मैं ऐसी मांग की भर्त्सना करता हूं जो मांग कर के एक स्वतंत्र पंजाब की कल्पना कर रहे हैं, एक सिख राज्य की कल्पना कर रहे हैं। स्वतंत्र सिख राज्य की कल्पना करना, हमारे गुरुओं द्वारा दिखाए गए मार्ग दर्शन पर कुठाराघात है। मैं उस सिख धर्म की कल्पना की बात करता हूं जिसके रचयिता गुरू नानक देव जी जैसे लोग, गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज ने कभी भी अपने आप को संकीर्णता से नहीं जोड़ा और सारे भारत को अपना घर समझा। यही कारण है कि जिस समय गुरू ग्रंथ साहब ने गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने विचित्र नाटक में अपनी बायोग्राफी लिखते हुए कहा कि किस तरह से उन्होंने अपने पूर्व जन्म में हेमकुंत पर्वत जो सप्तसिंधु के बीच में सुशोभित है, उत्तर प्रदेश में स्थित है वहां पर अपनी तपस्या की थी और उसके बाद गंगा के किनारे पटना साहब में जन्म लिया था जहां से मैं संसद में आता हूं। उसके बाद उन्होंने अपना जीवन, जो जीवन का बहुमूल्य समय था पौंटा साहब में यमुना नदी के किनारे गुजारा और जब देह त्यागने का समय आया तो गोदावरी के किनारे नांदेड़ जो हजूर साहब के नाम से जाना जाता है, महाराष्ट्र में जा बसे। उनके जीवन चरित्र से यह महसूस होता है कि गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज ने कभी भी अपने आप को संकीर्ण महसूस नही किया और संकीर्णतावाद का उपासक नहीं माना। उसका यह बहुत बड़ा उदाहरण है। जब गुरु ग्रंथ साहब की रचना हुई तो गुरु ग्रंथ साहब में 36 साधु-संतों, गुरुओं की बाणी अंकित हुई जिसमें 6 सिख गुरु हैं और 30 सारे भारत के साधु संत हैं, कोई बंगाल को है, कोई उड़ीसा का है, कोई महाराष्ट्र का है, कोई उत्तर प्रदेश का है, कोई मध्य प्रदेश का है और कोई बिहार का है। सारे भारत के साधुओं, संतों की बाणी को एक जगह इकट्ठा कर के उन्होंने गुरु ग्रंथ साहब का रूप दिया और अंत में उन्होंने कहा

गुरु ग्रंथ जी मानियों, प्रगट गुरां की देह।

गुरु प्रथा को समाप्त कर के गुरु ग्रंथ साहब को पूरी सिख कौम को समर्पित कर दिया। परन्तु यह विभूतियां दिन प्रति दिन गुरुओं के नाम पर और धर्म के नाम पर अलग राज्य की कल्पना करना यह बहुत दुर्भाग्यजनक है। भारत को गर्व है और मुझे इस वक्त वह बात याद आती है जब बाबर ने इस देश पर हमला किया था तो उस वक्त गुरु नानक देव जी ने कहा था, आज से पांच सौ साल पहले कहा था—

खुरासान खसमाना किया, हिन्दुस्तान डराया।

हिन्दुस्तान का कनसेप्ट देने वाले हमारे वर्तमान युग के नहीं हैं। पहले हिन्दुस्तान को आर्यावृत कहा गया और आर्यावृत के बाद हिन्दुस्तान का कनसेप्ट देने वाले गुरु नानक देव जी महाराज और उनकी उपासना करने वाले सिख लोग आज स्वतंत्र सिख राज्य की कल्पना करें तो बड़ा दुर्भाग्यजनक है। लोग ऐसे रास्ते क्यों चुन लेते हैं और उसका क्या कारण है? पंजाब के बाहर रहने वाले जितने सिख हैं और पंजाब के अन्दर रहने वाले जितने सिख हैं, हर एक सिख अकाली नहीं है। एकाली दल एक राजनीतिक दल है। कोई राजनीतिक दल ऐसी बात जब कहता है तो पंजाब से बाहर रहने वाले सिख भी किस तरह से इमोशनली जुड़ जाते हैं, उसके पीछे क्या कारण है, इस पर भी नजर डालने की

जरूरत है । पिछले दिनों देखा गया श्रीमती इन्दिरा गांधी जी की हत्या के बाद दिल्ली में और सारे भारत में कौमी दंगे हुए और उन दंगों में हजारों सिख मारे गये । आज 10 साल पूरे होने जा रहे हैं, आज तक उन्हें न्याय नहीं मिला । न्याय का दरवाजा खटका-खटका कर थक गये हैं । जब उन लोगों को न्याय नहीं मिलता तभी वे लोग ऐसे लोगों के चंगुल में फंसते हैं जो लोग एक स्वतंत्र सिख राज्य की कल्पना करने की बात कह रहे हैं। मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करना चाहता हूं कि सिख सर्वदा मुख्य धारा में रहे हैं, सिख सर्वदा देश प्रेमी रहे हैं, सिख सर्वदा देश की एकता और अखंडता की . . . . (व्यवधान) की बातें करते रहे हैं, देश प्रेम की भावना में सिखों का स्थान सबसे ऊंचा रहा है, उसी सिख को जब न्याय नहीं मिलता है तो वह ऐसे लोगों के चंगुल में फंसता है जो लोग विभ्रांत करके उन्हें देशद्रोही बनाने की कोशिश करते हैं। मैं आपके द्वारा मांग करता हूं कि सिखों के प्रति जो अन्याय पंजाब में या पंजाब के बाहर है, उन्हें पूरा न्याय दिलाने के लिए कोशिश करनी चाहिए। सिख सर्वदा मुख्य धारा में रहा है, मुख्य धारा में रहना चाहता है और अपने दसों गुरुओं द्वारा चलाये हुए रास्ते पर चलना चाहता है जिन्होंने यूनिवर्सल ब्रदरहुडिज्म का कन्सेप्ट दिया था, जिन्होंने सारे विश्व को आध्यात्म के माध्यम से बदल देने की कोशिश की थी। सिख उसी रास्ते पर चलना चाह रहे हैं। मैं आपके माध्यम से एक स्वतंत्र सिख राज्य की जो मांग है वह सर्व सिख कौम की नहीं पर अकाली दल की जरूर हो सकती है, यह कहकर अपने विचार रखना चाहता हूं।

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI SIKANDER BAKHT) : Madam, I just want to say this. We have read about it in the newspapers. I want to know whether this matter in all its detila, has already been brought to the notice of the Home Ministry because some of the words used, as they have appeared in the newspapers, are not clear. It is not clear whether they want a Sikh raj within the Constitution of India or they have the tame old theme of establishing an indepen-dent Sikh State.

उसमें "राज करेंगे खालसा" इस किस्म के लफ्ज तो इस्तेमाल हुए नहीं । लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं कि होम मिनिस्ट्री में इस सवाल पर कोई अध्ययन हुआ है, गौर किया गया है । तो वे किस नतीजे पर पहुंचे हैं । उसको बतायें। उसके बाद हम इसमें कुछ और बोलेंगे।

شری سکندر بخت: اس میں "راج کریں گے خالصہ" اس قسم کے لفظ تو استعمال ہوئے نہیں لیکن یہ جاننا چاہتا ہوں کہ ہوم منسٹری میں اس سوال پر کوئی ادھیین ہوا ہے، غور کیا گیا ہے۔ تو وہ کس نتیجہ پر پہنچے ہیں۔ اس کو بتائیں اس کے بعد ہم اس میں کچھ اور بولیں گے۔

श्री इकबाल सिंह (पंजाब) : अभी एक सब्जेक्ट अहलुवालिया जी ने उठाया। नया अकाली दल, अमृतसर बना है—शिरोमणि अकाली दल, अमृतसर । इस अकाली दल के बनने से यह प्रूव होता है कि बादल दल बिल्कुल अलग है क्योंकि बादल दल उसमें नहीं था, और भी तीन चार अकाली दल हैं जो उसमें शामिल नहीं हुए। जो ये

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

इकट्ठे हुए दल हैं जो कि कौम को दलदल में फंसा रहे हैं, इनका यह जो फैसला है, जो पेपरों में आया है, अभी सिकन्दर बख्त जी भी कह रहे थे, यह बड़ा एक अलग रहा है। देश में यह अशांति फैलाने वाली बात है।

मैं आजादी से पहले की बात करना चाहता हूं। अगर देश में फांसी के तख्त पर 129 चढ़े, इस देश की आजादी के लिए, उसमें से 93 सिख थे। अगर 1278 जलियांवाला बाग में शहीद हुए, उसमें से 738 सिख थे। अगर कालापानी की सजा पर गए, उसमें से 25 से ऊपर थे तो उसमें से 15 से ऊपर सिख थे। यही नहीं कामागाटामारू, देश में जिसने आजादी की लहर लाई उसमें टोटल सिख थे। यहां ही बस नहीं, कूकों के गुरु नामधारी सिख जिन्होंने तोपों के सामने, गोलों के सामने खड़े होकर अपनी कुरबानियां दीं और शहीदी दी, वह उन्होंने इस देश के लिए दी। उन्होंने इस देश को सर्वोत्तम माना। उन्होंने आजादी की लहर में सबसे बड़ा हिस्सा दिया। आज की डेट में राज्य सभा में, लोक सभा में, सिख मेम्बर आफ पार्लियामेंट हैं, बी.जे.पी. के सिख मेम्बर आफ पार्लियामेंट हैं, कोई पार्टी ऐसी नहीं जिसमें सिख नहीं हों। लेकिन यह अकाली दल-वहां पर 13-14 अकाली दल हैं, बादल अकाली दल भी है...। वह बिल्कुल अलग है। इन्होंने जो-जो डिमांड की है यह सिखों की डिमांड नहीं है। सिखों की डिमांड वह है जो गुरु नानक ने डिमांड की थी :

खुरासान खसमाना किया हिन्दुस्तान डराया,

आपे दोष न देई करता जमकर मुगल चढ़ाया''

सिखों की डिमांड है गुरु गोबिंद सिंह जी ने जो रखी थी। कभी बेटे वारे, कभी शालिद वारा।

''यह किस्सों से . . . .

वह भारत का आशिक पिता हो रहा है।''

वह सिख थे, वह गुरु थे। आज जिस ढंग से यह गुरचरण सिंह टोहरा अकाली दल और गुरचरण सिंह टोहरा अपने दलों के साथ मिलाना चाहता है यह एक गलत ढंग है और सिख होम लैंड की कोई बात नहीं। मैं इस सदन से सरकार से दरख्वास्त करता हूं और सारे देश को अपील करता हूं जहां भी कोई सिख है नानक नाम मेरा है, 11 करोड़ पंजाबी बोलने वाला इंसान है, सतनामिए हैं, सिंधी हैं, ये सब लोग गुरु को मानने वाले, ये ऐसी दलदल में फंसने वाले नहीं हैं। इतना ही मैं आपसे कहता हूं।

SHRI S. JAIPAL REDDY (Andhra Pradesh) : This House is one in denouncing and deploring this disturbing development. None of us is opposed to the unity of factions of any party, be they of the Akali Dal or some other party.

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA (Punjab) : Including the Janata Dal.

SHRI S. JAIPAL REDDY: I don't think we could be facetious on this occasion. As has been pointed out, the fact of the matter is that not all factions of the Akali Dal are united either. But this demand that there should be a Sikh State is higly disturbing and, as has been pointed out by the Leader of the Opposition, there is an element of vagueness in the

demand as to whether they are asking for it within the framework of the Indian State or outside. Such a demand itself is unconstitutional. It rens counter to the secular ethos of the Constitution and our polity. The Government of India, particularly the Home Ministry, must take not of this and react to this and take the House into confidence.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली) : उपसभापति महोदया, जो प्रश्न अहलुवालिया जी ने उठाया है वह इस देश के लिए बहुत ही महत्व का प्रश्न है । इस देश के निर्माण में सिख पंथ ने जो बलिदान दिए हैं और उन्होंने जो हुतात्मा उनमें से उत्पन्न हुए उसके कारण ही आज भारत की स्थिति वह है जिसमें आज हम बैठे हैं। गुरु तेग-बहादुर जी ने पंजाब में नहीं, दिल्ली में चांदनी चौक के अंदर बलिदान दिया था। भाई मतिदास यहां आरे से चीरे गए थे । भाई दयाल दास यहां उबलते हुए कड़ाहे में डाले गए थे। बंदा वीर बहादुर का अंग-अंग इसी लाल किले के सामने काटा गया था। गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज के बेटे दीवारों में चुने गए और उन्होंने अपने बलिदान दिए। बलिदानों की ऐसी महान परंपरा दुनिया के इतिहास में कहीं दिखाई नहीं देती। परन्तु आज पंजाब के अंदर कुछ लोग एकत्र हो कर इसी देश का बंटवारा करने की बात करते हैं या इस देश में कोई सार्वभौम सिख राज्य स्थापित करने की बात करें, चाहे वह संविधान के अंदर है या बाहर, सार्वभौम सिख राज्य संविधान के अंतर्गत हो ही नहीं सकता । इसलिए उपसभापति महोदया, मैं तो केवल इतना कहना चाहता हूं कि अधिक स्वायत्ता मांगे, अधिक अधिकार मांगे कोई प्रांत उसमें तो कोई आपत्ति नहीं हो सकती, परन्तु चाहे वह कश्मीर हो, चाहे पंजाब हो, इसको किसी भाग को इस देश से अलग होने की इजाजत नहीं दी जा सकती। सारा देश मिल कर इस देश की एकता और अखंडता के लिए सारे देशभक्त मिल करके ऐसी मांग का विरोध करते हैं और इसलिए पंजाब में चाहिए तो यह कि वह मिल करके सभी राज्यों के साथ अपने कुछ अधिकारों की बात करें, परन्तु इस देश के और अधिक बंटवारे की बात इस देश में सहन नहीं की जाएगी। इस बात को सब को स्पष्ट कर देना चाहिए।

SHRI MURASOLI MARAN (Tamil Nadu) : Madam, we all stand for the unity and integrity of the country. The Sikhs have sacrificed a lot for the freedom of this country. They stand in the vanguard of our defence system. But, if they have any grievance, we should not start ringing an alarm bell and shout this is scession and say they are anti-nationals. It is because every citizen has got a right to have a grievance. If they have a grievance, if they have any emotional problem, we should approach them fraternal way. We should not treat it as an anti-natinalist movement. As Mr. Jaipal Reddy has rightly said, there is some vagueness in their demand. They say that they want a separate area. We do not know what it means. Secondly, one good element in their so-called Amritsar declaration is that whatever they want to achieve they want to achieve within the framework of the united India. That is a good thing.

Thirdly, whatever they want to achieve, they want to achieve it through peaceful means. These points have been reported in today's newspapers.

As Mr. Malhotra has pointed out, if they stand for more autonomy, we have

nothing against it. If they stand for more rights for the States, we have nothing against it because we are supposed to be a federal State; and federalism is one of of the basic structures of the Constitution. This federalism may be defective, it may be *quasi,* it may not be genuine. But we should not be panicky about it. Our approach to it should be in a friendly way. We should talk to them. We should understand them first. We should understand what their grievances are. We should not be hasty. We should not rush forward and declare them as anti-national. That is my point of view. Let us be patient. Let us not say that they are anti-national. Let us not drive them to a corner.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Dr. Biplab Dasgupta, this is a very important issue. Eevery Member want to speak on this issue. I request the Member to be brief so that we can take up other issues.

Dr. BIPLAB DASGUPTA (West Ben-sal): Madam Deputy Chairman, the issue which has been raised by Mr. Ahluwalia is a very serious one. My feeling is that although various factions of the Akali Dal have come together, they do not represent the opinion of the peace loving Sikhs. It is unfortunate that this development has come only after a few days after we have observed 75 years of Jallianwalabhagh incident which has been carved out in golden letters in the history of the Indian national movement wherein the Sikhs along with Hindus and Muslims have shed their blood for the freedom of the country. We who come from Bengal have a very long association with the freedom fighters of Punjab during the liberation struggle. The Gadhar parly activists who were in Canada had seat *a* shipment of arms to the revolutionaries in Bengal for their flight against the British. So, let us not think that just because various factions of the Akali Dal have come together, they constitute the Majority of the people or they reflect the majority feelings of the Sikhs.

Though I am not a Sikh, I would like to point out that the Sikh religion is one of the most tolerant religions in the world. I remember when 1 went to Kenya, I was driving from Nairobi to Mombase which is 400 KMs away. In the middle of my journey, I found a Gurudwara. I was very curious and I went there. I found an eighty year old Sikh, with a fine white beard, sitting there quietly and serving the Christian Africans. That has always been the tradition of the Sikhs. It was not an intolerant religion. I would like to mention just two or three important points.

THE DEPUTY CHAIRMAN : It is not a discussion. We have already taken 30 minutes. I am sorry, I have other business also. Shrimati Sushma Swaraj.

Dr. BIPLAB DASGUPTA: Wherever there is mixing a religion with politics that should be thoroughly condemned by all of us. We are opposed to the attempt at disintegration of the country anywhere by any political force. These are the points I would like to make on behalf of my party very strongly .. . *(Interruptions)* .. .

THE DEPUTY CHAIRMAN : You may support what Mr. Ahluwalia has said because we have other issues. We have already taken on this matter 38 to 40 minutes.

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA : Madam, I come from Punjab. Therefore, I should be allowed to speak.

THE DEPUTY CHAIRMAN : We are from India.

श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा) : उपसभापति महोदया, इसे संयोग ही कहूंगी. . (व्यवधान) . . .

THE DEPUTY CHAIRMAN : She has been permitted to make a Special Men tion.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S. B. CHAVAN): I would like to react to the earlier one.

श्रीमती सुषमा स्वराज : दोनों पर एक साथ रिएक्ट कर दें क्योंकि इस पर भी मैं चाहूंगी कि उनका रिएक्शन आए । . . . . (व्यवधान) . . . . .

SHRI S. B. CHAVAN : Madam, the point raised by my esteemed friend, Shri Ahluwalia, is very important. Whatever be the context in which the problem has been raised, some of the members, in the name of unity, have come together and they seem to have issued what is called the Amritsar Declaration. I am still to study the entire thing and come to my own conclusion as to what exactly is the motivation behind the whole thing. According to my information, for the last 12-13 years, there had been no elections to the SGPC. In fact, we were seriously considering ordering elections to the SGPC. Maybe, this is one of th© reasons; to create some kind of a problem and see that the elections are again post-poned. I do not know whether that is the reason. If that be so, then, of course, I have got nothing to worry. But I am not going to take matters so lightly. I will definitely take matters very seriously and try to understand the implications because I see that the seeds of the Anand-pur Sahib Resolution are very much there. Some of the members who seem to have participated, seem to have almost forced certain issues on them. But I do not have any authentic information of the entire background. So, the Government will definitely study the entire thing and thereafter come to its conclusion as to whether it deserves to be given the kind of seriousness which I have just now stated or whether there are any other considerations which, in fact, are weighing. I can well undersand the point raised by some of the hon. Members. If they have any legitimate grievances, by all means, those grievances can definitely be attended to. There is no problem about the grievances being not aattended to. But that does not allow anyone to create a kind of atmosphere wherein people might feel that here is a small fraction which is again toying to repeat the same old idea of secessionism which, at one time, was very much in their mind. They could not participate in the elections also. This is one of the things which you cannot possibly forget. These are the two things which we will have to keep in mind. I will repeat that if they have any legitimate grievances, certainly, we are there to help them out to the extent it is possible. But certain issues are there which do require consultation with all other parties. Without that, we cannot possibly come to any definite conclusion. This is what I wanted to inform the House of.

श्री सिकन्दर बख्त : सदर साहिबा, क्या लीडर आफ द हाउस इस सत्र के खतम होने से पहले जिस नतीजे पर भी पहुंचें उसकी खबर लेकर हाउस में तशरीफ लाएंगे?

شری سکندر بخت : صدر صاحبہ - کیا لیڈر آف دہ ہاؤس اس سترکے ختم ہونے سے پہلے جس نتیجہ پر بھی پہنچیں اس کی خبر لے کر ہاؤس میں تشریف لائیں گے -

श्री एस. बी. चव्हाण : यह डिपेण्ड करता है उसके सारे इम्पलीकेशन पर . . . . **(व्यवधान)** . . . . .

श्री सिकन्दर बख्त : नहीं, सत्र के खत्म होने से पहले जो कुछ मालूम हो जाए ।

شری سکندر بخت : سترکے ختم ہونے سے پہلے جو کچھ معلوم ہو جائے -

श्री एस. बी. चव्हाण : अगर हो सके, मेरी कोशिश रहेगी, लेकिन मैं आपको यह वायदा नहीं कर सकता हूं कि यह सत्र खतम होने से पहले मैं आपके सामने आऊंगा।

श्री सिकन्दर बख्त : जितना भी नतीजा हो, पूरे तौर से न भी हो, सत्र खतम होने से पहले तशरीफ लाएं तो अच्छा होगा।

شری سکندر بخت : جتنا بھی نتیجہ ہو - پورے طور سے نہ بھی ہو، ستر ختم ہونے سے پہلے تشریف لائیں تو اچھا ہوگا -

†[ ]Transliteration in Arabic (script. 18—26RSS/95

SHRI N. GIRI PRASAD (Andhra Pra-: desh) : Madam, it is a very important matter. I think the Government has to . convene the National Integration Council to discuss this vital matter. There should also be a wider consultation among political parties. After that, taking into account the background and the present facts, the Government has to make a statement here not only to discuss it in ths House but to educate the people all over the country about the unity and the integrity of the country. Of course, we give those people the benefit of doubt whether they want actual secession or something like that. Though you give them that benefit, there should be clarity of views in the House and outside the House so that the country's unity can be protected.

Rendering Justice to Victims of 1984 Riots

श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा) : उप-सभापति महोदया, इसे संयोग ही कहूंगी कि जो मसला मैं उठा रही हूं शून्यकाल के दौरान आपकी अनुमति से, वह भी सिख समुदाय से जुड़ा है, लेकिन यह मसला उनकी वेदना और उनके प्रति होने वाले अन्याय से जुड़ा है। आपको याद होगा, महोदया, कि सन् 1984 के नवंबर महीने में देश की राजधानी में जो क्रूरता का नंगा नाच हुआ था, विश्व में उसका कोई सानी नहीं हो सकता। . . **(व्यवधान)** . . . . .

महोदया, मैं कह रही थी कि 1984 के नवंबर महीने में जिस तरह की सिख विरोधी भावनाएं भड़का करके, केशधारी बंधुओं को जलाया गया, मारा गया, सरे-आम गले में टायर डालकर के आग लगाई गई। उनकी सम्पत्तियों को लूटा गया, उस घटना की याद आते ही रोंगटे खड़े हो जाते